IB DIPLOMA PROGRAMME
PROGRAMME DU DIPLÔME DU BI
PROGRAMA DEL DIPLOMA DEL BI

M07/1/A1HIN/SP1/HIN/TZ0/XX

22070131

HINDI A1 – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI A1 – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI A1 – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Monday 14 May 2007 (morning)
Lundi 14 mai 2007 (matin)
Lunes 14 de mayo de 2007 (mañana)

1 hour 30 minutes / 1 heure 30 minutes / 1 hora 30 minutos

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a commentary on one passage only. It is not compulsory for you to respond directly to the guiding questions provided. However, you may use them if you wish.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas cette épreuve avant d'y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire sur un seul des passages. Le commentaire ne doit pas nécessairement répondre aux questions d'orientation fournies. Vous pouvez toutefois les utiliser si vous le désirez.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario sobre un solo fragmento. No es obligatorio responder directamente a las preguntas que se ofrecen a modo de guía. Sin embargo, puede usarlas si lo desea.

© IBO 2007

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (क) तथा (ख)। इन दोनों में से किसी एक पर व्याख्या लिखिए।

१. (क)

'इंडोपाक कल्चरल मिशन' के लिए जिन पॉच शिक्षकों का चयन हुआ है, उन में एक नाम कौस्तुभ का भी है। अभी दो साल पहले ही तो आई. आई. टी.से एम. टेक. करने के बाद प्रवक्ता के पद पर सीधे- सीधे यहीं आया था। सुनयनाजी बेटे कौस्तुभ की शादी के सपने देखने लगी हैं। उन्होंने तो अभी से नामों के लिए शब्दकोश भी देखना शुरू कर दिया है।

उदयेशजी उनके इस बचकानेपन पर अक्सर हॅस पड़ते हैं, 'क्या सुनयना, 'सुत न कपास जुलाहे से लट्ठमलट्ठा' वाली कहावत तुम अभी से चरित्रार्थ कर रही हो। कौस्तुभ समेत पॉच शिक्षकों और पचास छात्रों का दल लाहौर पहुँच गया है। लाहौर घूम कर यह दल पाकिस्तान घूमने निकला। हड़प्पा देखने के बाद दल ननकाना साहब भी गया। गुजरांवाला की गलियॉ और कराची की हवेलियॉ भी देखी गईं। पाकिस्तान का पंजाब तो उन्हें भारत का पंजाब ही लगा। वही सरसों के लहलहाते खेत और तंदूर पर रोटी सेंकती गाती हुई औरतें। वही बड़ा सा लस्सी भरा गिलास और मक्के की रोटी पर बड़ी सी मक्खन की डली। भारत-पाकिस्तान के विद्यार्थी आपस में जितने प्रेम से मिले और जिस अपनेपन से विचारों का आदान-प्रदान किया उसे देख कर यही लगा कि एक परिवार के दो बिछुड़े हुए संबंधी अरसे बाद मिल रहे हों। कौस्तुभ के पूछने पर उस ने अपना नाम केतकी बताया। गुलाबी सूट में लिपटी उस लंबी छरहरी गोरी युवती ने पहली नजर में ही कौस्तुभ का दिल जीत लिया था। दूसरे दिन डा० किशोर तब सकते में आ गए जब कौस्तुभ ने उन्हें केतकी से मिलवाया ही नहीं बल्कि उसका पूरा पता लिखा पर्चा उनकी हथेली पर रख दिया। घर में पूरा हंगामा मच गया। एक मुसलमान और वह भी पाकिस्तानी लड़की से कौस्तुभ का प्रेम। सुनयना ने तो साफ मना कर दिया कि एक संस्कारी ब्राह्मण परिवार में ऐसी मिलावट कैसे हो सकती है? डा० किशोर की सारी दलीलें बेकार गईं। लेकिन पंद्रहवें दिन सुबह-सुबह घंटी बजी। उन की बचपन की सहेली उनकी सामने है। कौस्तुभ की प्रेयसी की मॉ..लेकिन मुसलमान.... सिर चकरा गया। "तू लाहौर से अकेली आई है ?" "नहीं, अहमद और केतकी भी हैं। मेरी हिम्मत नहीं हुई उन्हें यहॉ लाने की।" अपने को मुश्किल से संभाला तो दोनों फूट कर रो पड़ीं। सुनयना ने उदयेश्य जी को फोन किया और सोचती रही कि क्या धर्म इतना कमजोर है कि दूसरे धर्म के साथ संयोग होते ही समाप्त हो जाए और फिर क्या धार्मिक कट्टरता इंसानियत से बड़ी है? क्या धर्म आत्मा के स्नेह के बंधन से ज्यादा बड़ा है?

उदयेश आए, सारी बातें सुनीं। उदयेश जी ने गाड़ी निकाली। दोनों को साथ लेकर होटल पहुँचे। अहमद ने कॉफी मंगवाई। सुनयना ने अपने हाथ का कंगन उतार कर केतकी के हाथ में डाल दिया। जब ऐसा मिलन हो, दो सहेलियों का,दो प्रेमियों का, दो संस्कृतियों का, दो धर्मों का, फिर सरहद पर कांटे क्यों ? गोलियों की बौछारें क्यों ?

सरहद पार से, उषा रानी,सरिता, जनवरी द्वितीय २००६

— लेखिका ने उपर्युक्त गद्य के माध्यम से समाज के समक्ष क्या आदर्श प्रस्तुत किया है? लेखिका अपनी बात कहने में कहाँ तक सफल हुई है?

— लेखक द्वारा प्रयुक्त कल्पनाओं एवं अन्य साधनों पर विचार करते हुए बताइए कि गद्य की विषयवस्तु द्वारा वह कहाँ तक पाठकों को प्रभावित करने में सफल रहा है?

— सुनयनाजी के चरित्र और उनकी विचारधारा के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं?

— प्रस्तुत गद्यांश की भाषा - शैली के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

१. (ख)

सोच रहा परदेशी

कैसे होंगे घर के दिन?
आंगन में तुलसी का बिरवा (पेड़)
झूम रहा होगा
घुटनों पर घर भर में बेटा
घूम रहा होगा।
लेकिन नींद न आई होगी
उसको मेरे बिन।
कंधे में सिंदूर लगाकर
मांग भरी होगी

दपर्ण के आगे जाते ही
ऑख भरी होगी।

घर आई बहना भी
बिटिया सुला रही होगी
आ मामा, आ मामा कहकर
भुला रही होगी।
भूल भूलकर मॉ हमको ही
टेर रही होगी
अनमन सी बैठी, बस माला
टेर रही होगी।

भूखी रही स्वयं 'औ' हमको
दिया दूध का ऋण।
बाबू ने मुश्किल से
कौर धरा होगा
भरा -भरा होगा मन भी

भरा- भरा होगा।
कई घरेलू बातें मन
चुभो रही हैं पिन।

यश मालवीय, नवनीत, दिसम्बर १९९०

— कविता के केन्द्रीय भाव को कवि कहाँ तक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर पाया है?

— कवि अपनी कविता के माध्यम से किस प्रकार प्रधान चरित्र 'परदेशी' के प्रति पाठकों के मन में लगाव एवं सहानुभूति का सृजन करने का प्रयास करता है?

— 'परदेशी' के सन्दर्भ में कवि द्वारा प्रयुक्त रचना- कौशल एवं प्रस्तुतिकरण पर प्रकाश डालिए।

— कविता की भाषा –शैली के बारे में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।